गधा और पत्थर

चीनी लोककथा



गधा और पत्थर

चीनी लोककथा

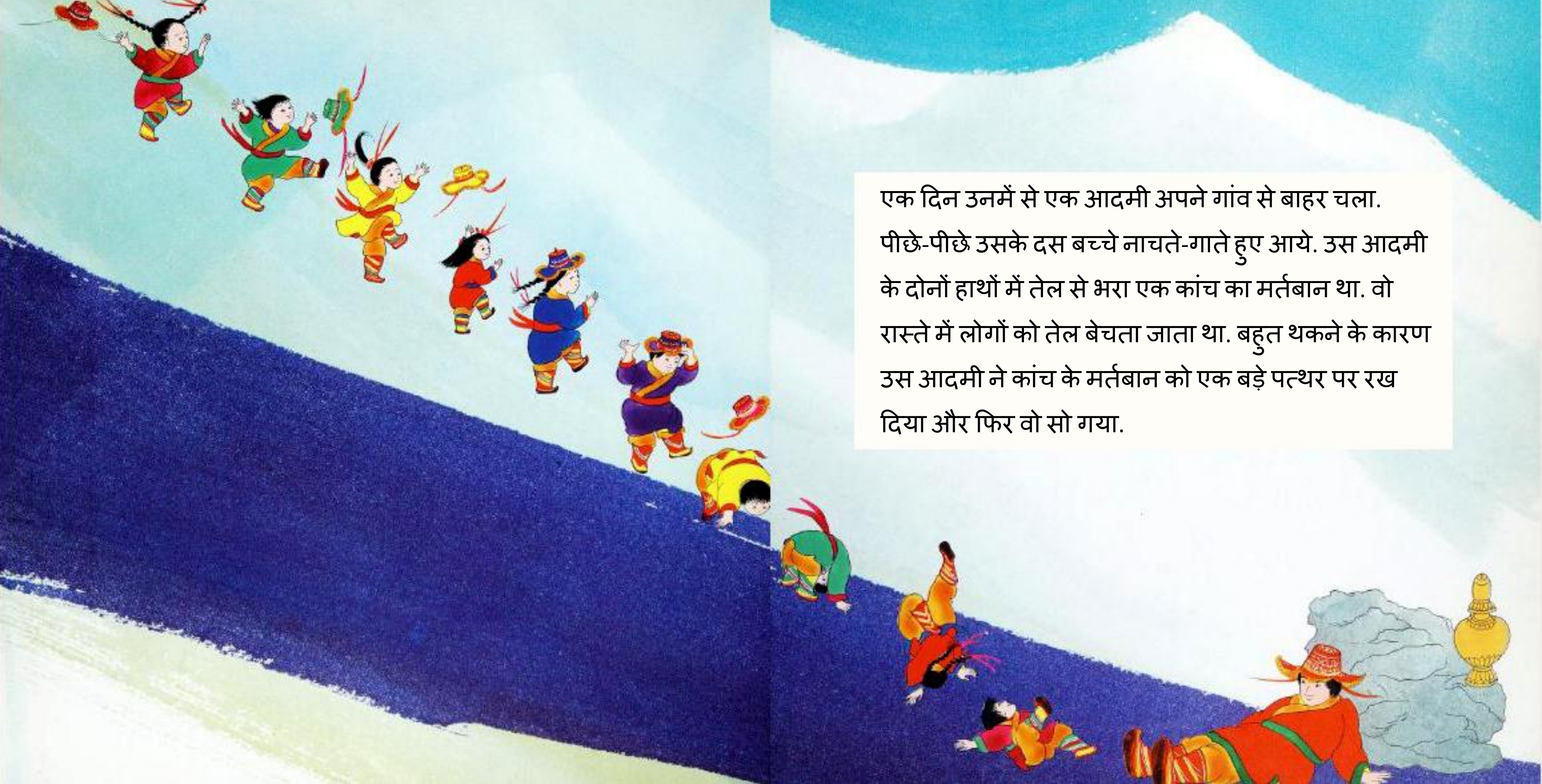


एक बार तिब्बत में, जहाँ के पर्वत आकाश छूते थे एक राजा राज्य करता था. वो अपने न्याय और ईमानदारी के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध था. सबसे ऊंचे पर्वत से लेकर सबसे गहरी घाटी तक राजा के न्याय की महिमा फैली थी.



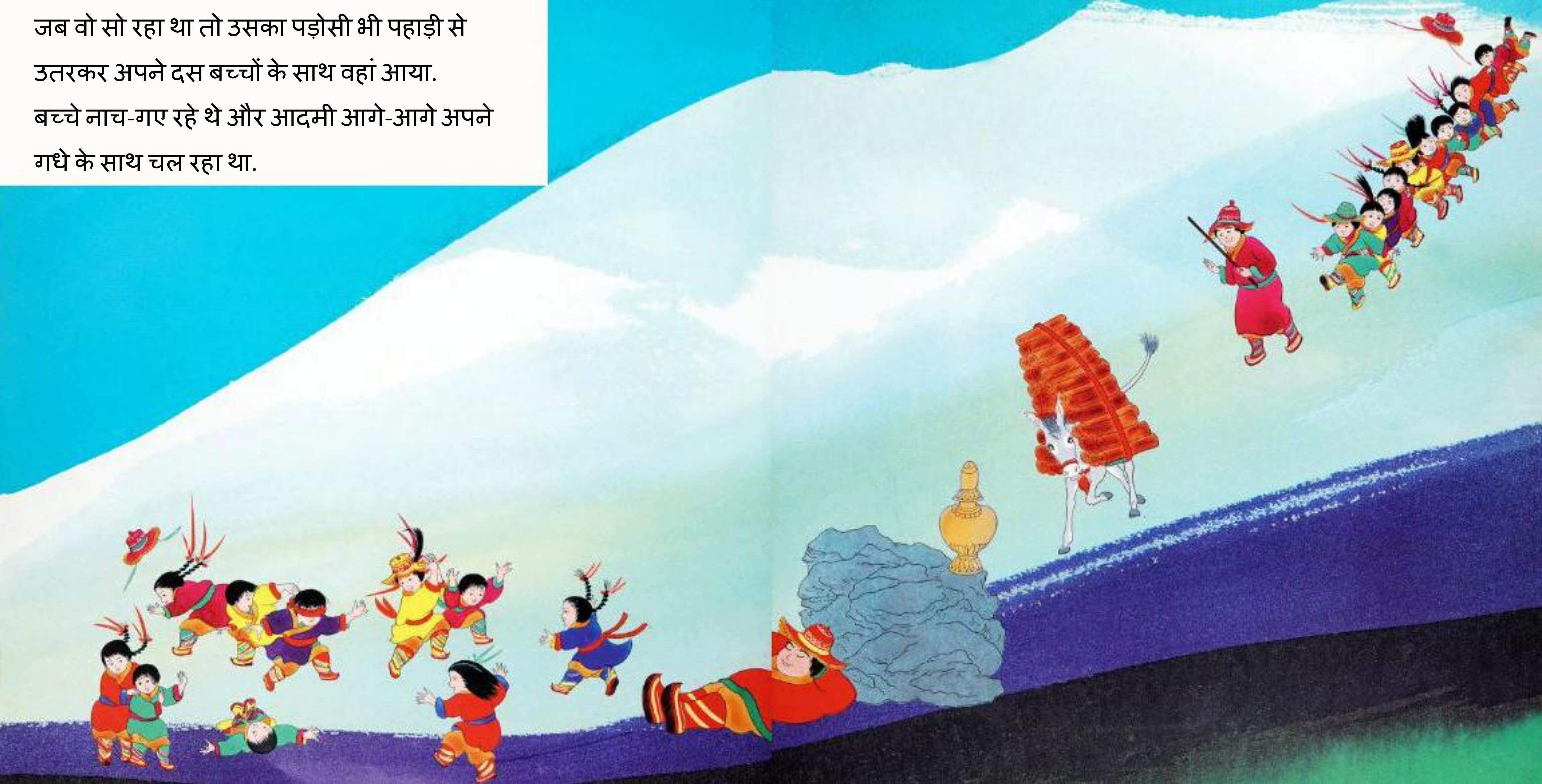


उस राजा के राज्य में एक पहाड़ी पर दो गरीब लोग रहते थे. दोनों आदमी बहुत मेहनती थे और ईमानदार थे. वे अपने परिवारों को पालने की भरसक कोशिश करते थे. हरेक के परिवार में पत्नी, दस बच्चे, माता-पिता, चाचा-चाची, दादा-दादी आदि थे.

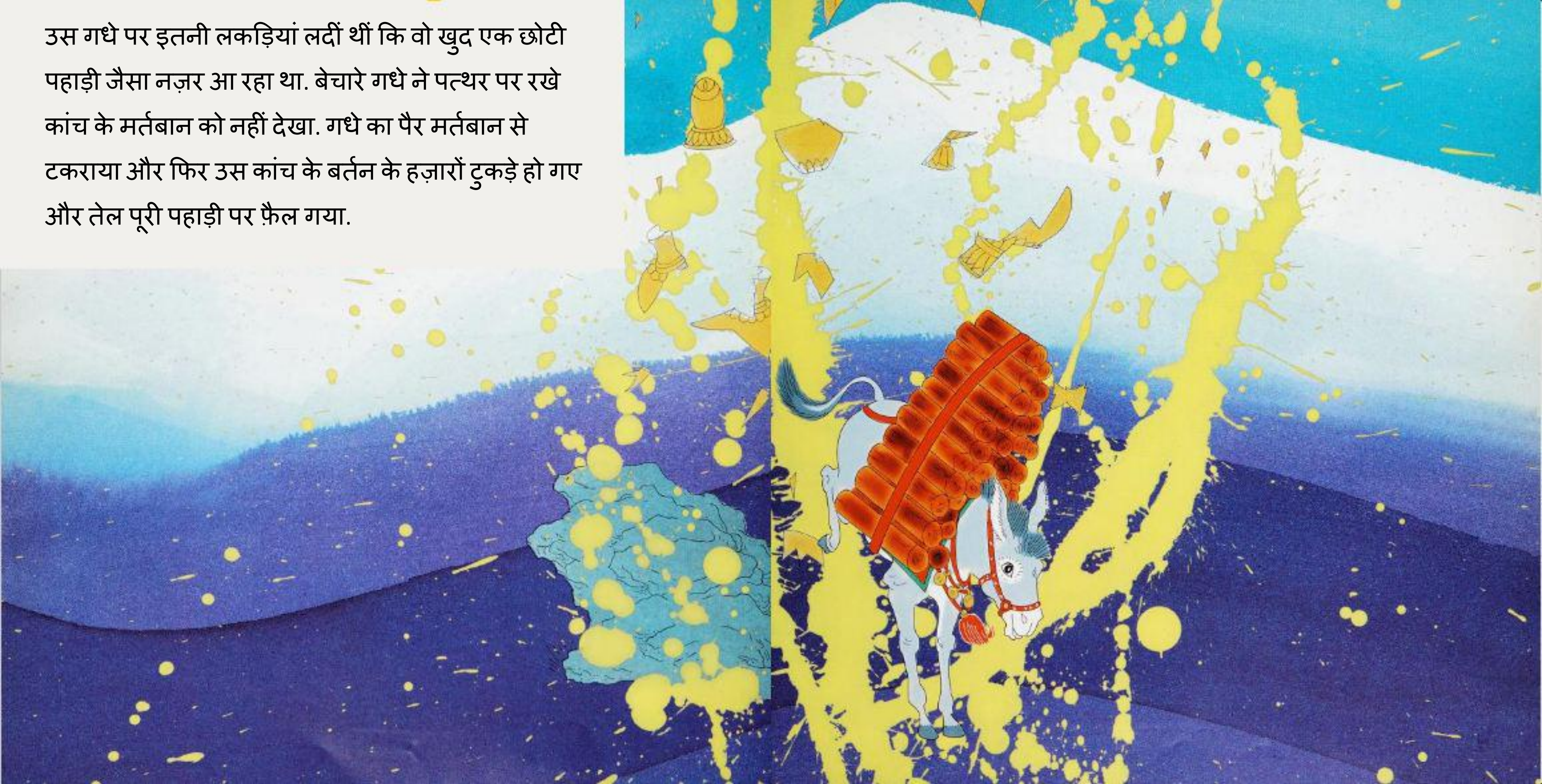


एक दिन उनमें से एक आदमी अपने गांव से बाहर चला. पीछे-पीछे उसके दस बच्चे नाचते-गाते हुए आये. उस आदमी के दोनों हाथों में तेल से भरा एक कांच का मर्तबान था. वो रास्ते में लोगों को तेल बेचता जाता था. बहुत थकने के कारण उस आदमी ने कांच के मर्तबान को एक बड़े पत्थर पर रख दिया और फिर वो सो गया.

जब वो सो रहा था तो उसका पड़ोसी भी पहाड़ी से उतरकर अपने दस बच्चों के साथ वहां आया. बच्चे नाच-गए रहे थे और आदमी आगे-आगे अपने गधे के साथ चल रहा था.



उस गधे पर इतनी लकड़ियां लदीं थीं कि वो खुद एक छोटी पहाड़ी जैसा नज़र आ रहा था. बेचारे गधे ने पत्थर पर रखे कांच के मर्तबान को नहीं देखा. गधे का पैर मर्तबान से टकराया और फिर उस कांच के बर्तन के हज़ारों टुकड़े हो गए और तेल पूरी पहाड़ी पर फ़ैल गया.



जिस आदमी का तेल था वो बहुत गुस्सा हुआ. उसने सारा दोष गधे के मालिक के सिर मढ़ा. गधे के मालिक ने कहा कि इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी. अगर गलती थी तो वो गधे की थी.

जिस आदमी का तेल था उसने कहा कि वो तेल ही उसकी एकमात्र पूँजी थी और अब वो अपनी पत्नी, दस बच्चों, माता-पिता, चाचा-चाची, दादा-दादी आदि को क्या खिलायेगा? उसका कांच का मर्तबान टूटा, पर उसमें उसकी तो कोई गलती नहीं थी.



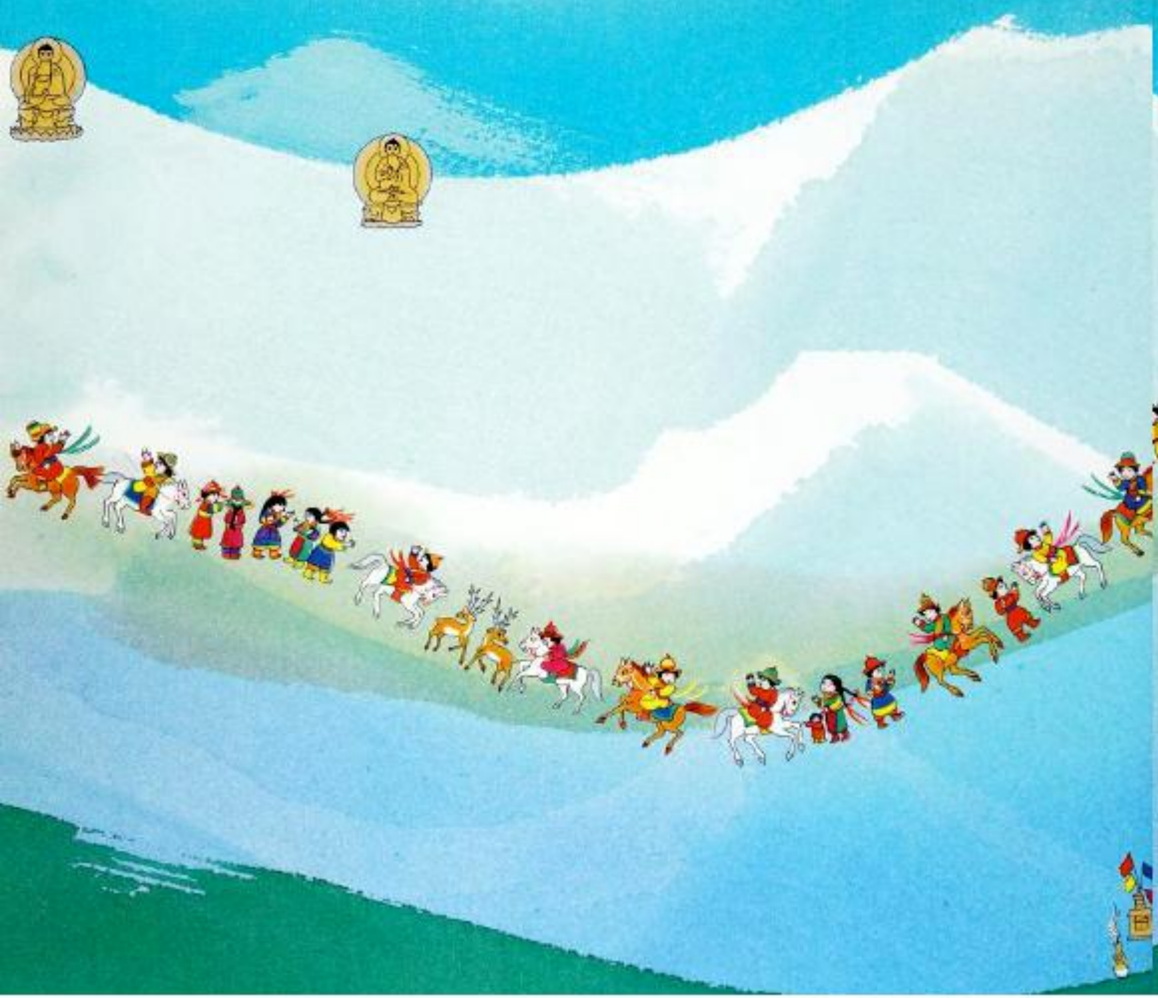
दोनों आदमियों में खूब तू-तू मैं-मैं हुई और लड़ाई-झगड़ा हुआ. दोनों के दस-दस बच्चे भी एक-दूसरे से लड़े और चिल्लाए. पर उससे बात कुछ बनी नहीं. फिर अंत में दोनों आदमी राजा के पास न्याय के लिए गए.

राजा ने दोनों आदमियों की बात ध्यानपूर्वक सुनी. उसे दोनों में से किसी की गलती नज़र नहीं आई. वे दोनों मेहनतकश और ईमानदार आदमी थे जो अपने बड़े परिवार का भरण-पोषण बड़ी लगन से करते थे. क्योंकि उन दोनों आदमियों में से किसी की गलती नहीं थी इसलिए गलती ज़रूर पत्थर या गधे की होगी!



राजा ने अपने सिपाहियों को भेजकर पत्थर और गधे दोनों को गिरफ्तार करवाया. बेचारे गधे के गले में हथकड़ी पड़ी थी. सिपाहियों ने पत्थर को भी ज़ंजीरों से कसकर बाँधा.





जल्द ही उस अजीबो-गरीब केस की खबर पूरे राज्य में फ़ैल गई.



जब दोनों आदमियों की पत्नियों, बच्चों, माता-पिता, चाचा-चाची, दादा-दादी आदि ने पत्थर और गधे दोनों की गिरफ्तारी की बात सुनी तो उन्हें लगा कि राजा बिल्कुल बौरा गया था.

राजा ने ऐलान किया कि अगले दिन सुबह
केस की सुनवाई होगी. केस की सुनवाई के लिए
एक बड़ा जलूस निकाला गया जिसमें झंडे,
तोरण, तुहरी और ढोल-मंजीरे बजाए गए.





एक पत्थर और गधे के खिलाफ जांच-पड़ताल की बात हरेक को बड़ी अजीब सी लगी. पर लोग बहुत जिज्ञासु होते हैं, इसलिए इस अजीबो-गरीब केस की सुनवाई के लिए अगले दिन कोर्ट-कचेहरी में लोगों की बड़ी भीड़ उमड़ पड़ी.

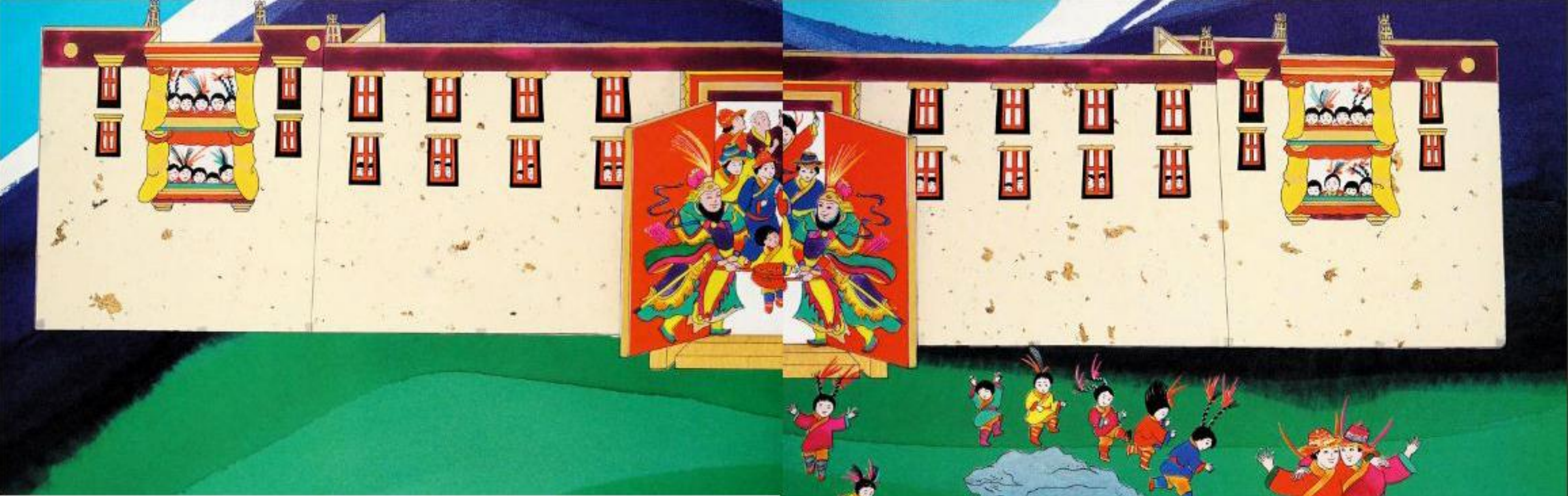


राजा अपने सिंहासन पर आकर बैठे. फिर उसने सिपाहियों को कोर्ट-कचेहरी के दरवाज़े बंद करने का आदेश दिया.

अंत में सुनवाई बस शुरू ही होने वाली थी.

राजा ने कहा, "आप लोगों को पता है कि किसी पत्थर या गधे को न्याय दिलाने का क़ानून में कोई प्रावधान नहीं है. फिर आप सब लोग इस मूर्खतापूर्ण केस को सुनने क्यों आए हैं? इस बेहूदा उत्सुकता के लिए हरेक को दस-दस सिक्कों का जुर्माना देना पड़ेगा."





राजा की बात सुनकर लोगों को खुद पर बेहद शर्मिंदगी महसूस हुई. हरेक ने दस-दस सिक्के दिए और फिर वे दरवाज़े से खिसके. आखिरी आदमी के जाने के बाद राजा ने सभी सिक्के उस आदमी को दे दिए जिसने अपना तेल खोया था. गधे को मुक्त कर दिया गया और पत्थर को उसके स्थान पर वपिस रखवा दिया गया. फिर केस की सुनवाई ख़त्म हुई. दोनों आदमी ख़ुशी-ख़ुशी अपने घर लौटे.



अगले बहुत सालों तक राजा बड़े विवेक और ईमानदारी से अपने राज्य पर शासन करता रहा. उस दिन से लोगों ने बेकार की उत्सुकता पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया. उन्होंने पत्थर और गधे के केस से अच्छा सबक सीखा था जिसे वो ज़िन्दगी भर नहीं भूले.



समाप्त